ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

Guru Nanak Dev Mission Series 249

"ਕਲਿ ਤਾਰਣ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਆਇਆ"

ਸਤਿਗੁਰ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ
ਦਾ
ਆਗਮਨ ਤੇ ਸੰਦੇਸ਼

सतिगुरु नानक का अवतरण और संदेश

The Advent and Message of Guru Nanak

Revised Edition

ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਮਿਸ਼ਨ ਪਟਿਆਲਾ
P.O. ਸਨੌਰ ਪਟਿਆਲਾ
ਪੰਜਾਬ (ਇੰਡੀਆ)

ਮੰਞ ਕੁਚਜੀ

ਮੰਞ ਕੁਚਜੀ ਅੰਮਾਵਣਿ ਡੋਸੜੇ ਹਉਂ ਕਿਉਂ ਸਹੁ ਰਾਵਣਿ ਜਾਉ ਜੀਉ ।
ਇਕ ਦੂ ਇਕਿ ਚੜੰਦੀਆਂ ਕਉਣੁ ਜਾਣੈ ਮੇਰਾ ਨਾਉ ਜੀਉ ।
ਜਿਨੀ ਸਖੀ ਸਹੁ ਰਾਵਿਆ ਸੇ ਅੰਬੀ ਛਾਵੜੀਏਹਿ ਜੀਉ ।
ਸੇ ਗੁਣ ਮੰਞੁ ਨਾ ਆਵਨੀ ਹਉ ਕੈ ਜੀ ਦੋਸ ਧਰੇਉ ਜੀਉ ।
ਕਿਆ ਗੁਣ ਤੇਰੇ ਵਿਥਰਾ ਹਉ ਕਿਆ ਕਿਆ ਘਿਨਾ ਤੇਰਾ ਨਾਉ ਜੀਉ ।
ਇਕਤੁ ਟੋਲਿ ਨ ਅੰਬੜਾਂ ਹਉ ਸਦ ਕੁਰਬਾਣੈ ਤੇਰੇ ਜਾਉ ਜੀਉ ।
ਸੁਇਨਾ ਰੁਪਾ ਰੰਗਲਾ ਮੋਤੀ ਤੈ ਮਾਣਿਕੁ ਜੀਉ ।
ਸੇ ਵਸਤੂ ਸਹਿ ਦਿਤੀਆ ਮੈ ਤਿਨ ਸਿਉ ਲਾਇਆ ਚਿਤੁ ਜੀਉ ।
ਮੰਦਰ ਮਿਟੀ ਸੰਦੜੇ ਪਥਰ ਕੀਤੇ ਰਾਸਿ ਜੀਉ ।
ਹਉ ਏਨੀ ਟੋਲੀ ਭੁਲੀਅਸੁ ਤਿਸੁ ਕੰਤ ਨ ਬੈਠੀ ਪਾਸਿ ਜੀਉ ।
ਅੰਬਰਿ ਕੂੰਜਾਂ ਕੁਰਲੀਆ ਬਗ ਬਹਿਠੇ ਆਇ ਜੀਉ ।
ਸਾਧਨ ਚਲੀ ਸਾਹੁਰੈ ਕਿਆ ਮੁਹੁ ਦੇਸੀ ਅਗੈ ਜਾਇ ਜੀਉ ।
ਸੁਤੀ ਸੁਤੀ ਝਾਲੁ ਥੀਆ ਭੁਲੀ ਵਾਟੜੀਆਸੁ ਜੀਉ ।
ਤੈ ਸਹ ਨਾਲਹੁ ਮੁਤੀਅਸੁ ਦੁਖਾਂ ਕੂੰ ਧਰੀਆਸੁ ਜੀਉ ।
ਤੁਧੁ ਗੁਣ ਮੈ ਸਭਿ ਅਵਗਣਾਂ ਇਕ ਨਾਨਕ ਕੀ ਅਰਦਾਸਿ ਜੀਉ ।
ਸਭਿ ਰਾਤੀ ਸੋਹਾਗਣੀ ਮੈ ਡੋਹਾਗਣਿ ਕਾਈ ਰਾਤ ਜੀਉ ।

ਸੂਹੀ ਮਹਲਾ ੧

गुरु नानक अवतरण और सन्देश

सतिगुरु नानक देव जी के पांच सौ वर्षीय प्रकाश उत्सव दिवस के अन्तर्गत, गुरु नानक मिशन के इस ट्रैक्ट में, सतिगुरु जी के आगमन और संसार के प्रति दिये गये सन्देश सम्बन्धी उनके अपने वचन, पंजाबी, हिन्दी, अंग्रेज़ी अनुवाद सहित अंकित हैं। इनको निम्नलिखित नौ भागों में विभाजित किया गया है :—

(१) सतिगुरु जी के अवतरण के समय भारत में प्रशासन, समाज और जनता की स्थिति।

(२) सतिगुरु जी का आगमन, भाई गुरदास तथा अन्य समकालीन लेखकों के शब्दों में।

(३) सतिगुरु जी का स्थापित किया गया प्रभु का स्वरूप।

(४) ऐसे प्रभु के अभिज्ञान साधन।

(५) मुक्ति कैसे मिले।

(६) प्रभु में लीनता का साधन।

(७) परन्तु मनुष्य की अवस्था अशिष्ट और विवाह-विच्छेदित स्त्री जैसी है।

(८) प्रभु-पति मिलाप की तड़प ही इसे सुहागवती बना सकती है।

(९) गुरु नानक का प्रभु-मिलाप दीवानगी की हद तक पहुँचा हुआ था।

सचिव

THE ADVENT AND MESSAGE OF GURU NANAK

This tract of the Guru Nanak Mission Series is published in Commemoration of the Quin-Centenary of the Great Guru Nanak. It contains selected pieces from compositions of the Satguru himself incorporated in the Holy Guru Granth Sahib and a few lines from the writings of the great Sikh Scholar Bhai Gurdas, together with their translations in Hindi and English. The subject has been split under nine different heads Viz :

(i) Times of the advent of Guru Nanak as visualised by the Guru himself.

(ii) Guru Nanak's Advent as described by Bhai Gurdas and other contemporaries of the Guru.

(iii) Godhead as conceived by Guru Nanak.

(iv) How may one realize God-the Truth ?

(v) Where to seek Deliverance ?

(vi) How to be one with the Almighty ?

(vii) But pitiable is the state of man-the meritless.

(viii) Devotional love-the only remedy.

(ix) The Guru faces the Master-His ecstatic love.

Secretary

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ।।

ਸਮਾਂ

੧. ਕਲਿ ਕਾਤੀ ਰਾਜੇ ਕਾਸਾਈ ਧਰਮੁ ਪੰਖ ਕਰਿ ਉਡਰਿਆ ।
ਕੂੜ ਅਮਾਵਸ ਸਚੁ ਚੰਦ੍ਰਮਾ ਦੀਸੈ ਨਾਹੀ ਕਹ ਚੜਿਆ ।
ਹਉ ਭਾਲਿ ਵਿਕੁਨੀ ਹੋਈ ।
ਆਂਧੇਰੈ ਰਾਹੁ ਨ ਕੋਈ ।
ਵਿਚਿ ਹਉਮੈ ਕਰ ਦੁਖ ਰੋਈ ।
ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਕਿਨਿ ਬਿਧਿ ਗਤਿ ਹੋਈ ।
(ਮਾਝ ਵਾਰ ਮ : ੧)

੨. ਸਰਮੁ ਧਰਮੁ ਦੁਇ ਛਪਿ ਖਲੑਏ ਕੂੜੁ ਫਿਰੈ ਪਰਧਾਨੁ ਵੇ ਲਾਲੋ ।
ਕਾਜੀਆ ਬਾਮਣਾ ਕੀ ਗਲ ਥਕੀ ਅਗਦੁ ਪੜੈ ਸੈਤਾਨੁ ਵੇ ਲਾਲੋ ।
(ਤਿਲੰਗ ਮ : ੧)

੩. ਜਿਨ ਸਿਰਿ ਸੋਹਨਿ ਪਟੀਆ ਮਾਂਗੀ ਪਾਇ ਸੰਧੂਰੁ ।
ਸੇ ਸਿਰਿ ਕਾਤੀ ਮੁਨੀਅਨਿ ਗਲ ਵਿਚਿ ਆਵੈ ਧੂੜਿ ।
ਮਹਲਾ ਅੰਦਰਿ ਹੋਦੀਆ ਹੁਣਿ ਬਹਿਣ ਨਾ ਮਿਲਨਿ ਹਦੂਰਿ ।
(ਆਸਾ ਮ : ੧)

੪. ਧਨੁ ਜੋਬਨੁ ਦੁਇ ਵੈਰੀ ਹੋਏ ਜਿਨੀ ਰਖੇ ਰੰਗੁ ਲਾਇ ।
(ਆਸਾ ਮ: ੧)

੫. ਖਤ੍ਰੀਆ ਤ ਧਰਮ ਛੋਡਿਆ ਮਲੇਛ ਭਾਖਿਆ ਗਹੀ ।
ਸ੍ਰਿਸਟਿ ਸਭ ਇਕ ਵਰਨ ਹੋਈ ਧਰਮ ਕੀ ਗਤਿ ਰਹੀ ।
(ਧਨਾਸਰੀ ਮ : ੧)

੬. ਲਬੁ ਪਾਪੁ ਦੁਇ ਰਾਜਾ ਮਹਤਾ ਕੂੜੁ ਹੁਆ ਸਿਕਦਾਰ ।
ਕਾਮੁ ਨੇਬੁ ਸਦਿ ਪੁਛੀਐ ਬਹਿ ਬਹਿ ਕਰੇ ਬੀਚਾਰੁ ।
ਅੰਧੀ ਰਯਤਿ ਗਿਆਨ ਵਿਹੂਣੀ ਭਾਹਿ ਭਰੇ ਮੁਰਦਾਰੁ ।
(ਵਾਰ ਆਸਾ)

੭. ਸਾਸਤ੍ਰ ਬੇਦੁ ਨ ਮਾਨੈਂ ਕੋਇ ।
ਆਪੋ ਆਪੈ ਪੂਜਾ ਹੋਇ ।
(ਰਾਮਕਲੀ ਵਾਰ ਮ : ੧)

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि

समय

1. कलि काती राजे कासाई धरमु पंख करि उडरिआ।
कूड़ अमावस सचु चन्द्रमा दीसै नाही कह चढ़िया।
हउ भालि दिकुनी होई।
अंधेरै राहु न कोई।
विचि हउमै करि दुख रोई।
कहु नानक किनि बिधि गति होई। (माझ वार म. १)

2. सरमु धरमु दुइ छपि खलो इ कूड़ फिरै परधानु वे लालो।
काजीआ बामणा की गल थकी अगदु पड़ै सैतानु वे लाली।
(तिलंग मः १)

3. जिन सिरि सोहनि पटीआ मांगी पाइ संधूरु।
से सिरि काती मुनीअनि गल विचि आवै घूड़ि।
महला अन्दरि हीदीआ हुणि बहिण न मिलनि हदूरि।
(आसा मः १)

4. धनु जोबनु दुइ वैरी होए जिनी रखे रंगु लाइ। (आसा मः १)

5. खत्रीया त धरम छोडिआ मलेछ भाखिआ गही।
सृसटि सब्र इक वरन होई धरम की गति रही (धनासरी मः १)

6. लबु पापु दुइ राजा महता कूड़ु हुआ सिकदार।
कामु नेबु सदि पुछीऐ है बहि बहि करे बीचारु।
अंधी रयति गिआन विहूणी भाहि भरे मुरदारु। (वार आसा)

7. सासत्र बेदु न मानै कोइ।
आपो आपै पूजा होइ। (रामकली वार मः १)

THE TIMES

1. The Kali (dark) age is a drawn sword, kings have turned butchers and justice has taken wings. The darkness of Falsehood has prevailed and the moon of truth appears nowhere, Bewildered am I in the search and find not the way in this darkness. Immersed in their ego the people bemoan. Says Nanak, I am at a loss to understand how they will get immuned.
2. Modesty and Righteousness have eclipsed and Falsehood rules the day. Nobody heeds the Kazis and Brahmans and nuptial ties are ceremonissed by the Satan.
3. They that wore long their lovely tresses, whose parting was touched with vermilian, the locks of their hair are shorn and dust is cast on their heads. Those who lived in palaces, cannot gain audience even.
4. Both riches and beauty that lured them away to revel in pleasures, have turned their enemies.
5. The warrior class (whose duty it was to stand for Righteousness) have abjured and have taken to the invaders' language. Everyone has forsaken his religious principles and infact Dharma exists naught.
6. Both Avarice and Sin are the king and the minister, and Falsehood is the mint-master.Lust is their assistant. He is summoned and consulted. They all sit together and plan evil designs. The people are blind and ignorant and with dead Conscience have become yesmen of the officials.
7. Doctrines enunciated in Shastras and vedas are ignored and everyone puts one's own interpretation and follows it.

युग अवस्था

१. यह घोर युग छुरी समान है और शासक कसाईयों की तरह अत्याचारी हैं। धर्म पंख लगा कर उड़ गया है। झूठ की काली बोली रात छाई हुई है और सत्य का चन्द्रमा कहीं दिखाई नहीं देता। मैं ढूण्ड कर ब्याकुल हो गया हूं, इस घोर अन्धकार में मार्ग नहीं दीखता। अहं के कारण दुखों मेंफसी प्रजा रो रही है। छुटकारा किस प्रकार होवे ?

२. न लज्जा रही, न धर्म वाली बात है। झूठ का बोल बाला है काजियों और ब्राह्मणों के स्थान पर विवाह और निकाह शैतान पढ़ा रहा है।

३. जो केश सुन्दरीयों के शीश का शृंगार थे और जिनकी मांगें सिंदूर से सुशोभित की जाती थी, वह कैंची से तूढ़ दिये गए हैं तथा सारा शरीर धूल से लिप्त है। जो महलों में निवास करती थी उन्हें हजूरी में उपस्थित होने की भी आज्ञा नहीं।

४. धन सम्पति एवं यौवन जिसकी मस्ती में सर्वस्व भूला हुआ था आज बैरी बन गए हैं।

५. क्षत्री (जिन्होंने धर्म का पक्ष पालन करना था) अपना धर्म त्याग कर मुसलमान शासकों का पानी भरते हैं और उनको ही भाषा का उच्चारण करते हैं। मलेच्छ शासकों की पराधीनता ही सब का वर्ण बन गया है, और धर्म वाली बात समाप्त हो गई है।

६. पाप और लोभ देश के राजा और मन्त्री हैं, और झूठ का सिक्का चलता है। काम इनका सलाहकार है जिससे प्रत्येक बात के लिए परामर्श लिया जाता है। इस प्रकार सारे ही मिल कर कुटिल षड़यन्त्र कर रहे है। प्रजा अज्ञानी और अन्धों के समान पराधीन है। तथा आत्मा-समान हीन होकर प्रशासकों के इशारे पर नाच रही है।

७. धर्म ग्रन्थों की मति कोई लेता नहीं। प्रत्येक अपनी कार्य सिद्ध के लिये अपने अपने अर्थ निकालता है और उसके अनुसार कार्य करता है।

ਆਗਮਨ

੧. ਥੰਮੇ ਕੋਇ ਨ ਸਾਧ ਬਿਨੁ ਸਾਧੁ ਨ ਦਿਸੈ ਜਗ ਵਿਚ ਕੋਆ ।
ਧਰਮ ਧੌਲ ਪੁਕਾਰੈ ਤਲੈ ਖੜੋਆ ।

(ਭਾਈ ਗੁਰਦਾਸ)

੨. ਸੁਣੀ ਪੁਕਾਰ ਦਾਤਾਰ ਪ੍ਰਭੁ ਗੁਰ ਨਾਨਕ ਜਗ ਮਾਹਿੰ ਪਠਾਇਆ ।

੩. ਕਲਿ ਤਾਰਣ ਗੁਰ ਨਾਨਕ ਆਯਾ ।

੪. ਸਤਿਗੁਰ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਗਟਿਆ ਮਿਟੀ ਧੁੰਧ ਜਗ ਚਾਨਣ ਹੋਆ ।
ਜਿਉਂ ਕਰ ਸੂਰਜ ਨਿਕਲਿਆ ਤਾਰੇ ਛਪੇ ਅੰਧੇਰ ਪਲੋਆ ।

(ਭਾਈ ਗੁਰਦਾਸ)

੫. ਭਯਾ ਅਨੰਦ ਜਗਤ ਵਿਚ ਕਲਿ ਤਾਰਨ ਗੁਰ ਨਾਨਕ ਆਯਾ ।
ਹਿੰਦੂ ਮੁਸਲਮਾਨ ਨਿਵਾਇਆ ।

(ਭਾਈ ਗੁਰਦਾਸ)

੬. ਬਲਿਓ ਚਰਾਗ ਅੰਧਾਰ ਮਹਿ ਸਭ ਕਲ ਉਧਰੀ ਇਕ ਨਾਮ ਧਰਮ ।
ਪ੍ਰਗਟ ਸਗਲ ਹਰ ਭਵਨ ਮਹਿ ਜਨ ਨਾਨਕ ਗੁਰ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ।

(ਸਵੱਯੇ ਮ : ੫)

੭. ਕਲਿਜੁਗੁ ਉਧਾਰਿਆ ਗੁਰਦੇਵ ।
ਮਲ ਮੂਤ ਮੂੜ ਜਿ ਮੁਘਦ ਹੋਤੇ ਸਭਿ ਲਗੇ ਤੇਰੀ ਸੇਵ ।

(ਆਸਾ ਮ : ੫)

੮. ਨਾਨਕਿ ਰਾਜ ਚਲਾਇਆ ਸਚੁ ਕੋਟਿ ਸਤਾਣੀ ਨੀਵ ਦੈ ।
ਲਹਣੇ ਧਰਿਓਨੁ ਛਤੁ ਸਿਰਿ ਕਰਿ ਸਿਫਤੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਪੀਵਦੈ ।

(ਵਾਰ ਸਤਾ ਬਲਵੰਡ)

੯. ਜੋਤਿ ਓਹਾ ਜੁਗਤਿ ਸਾਇ ਸਹ ਕਾਇਆ ਫੇਰ ਪਲਟੀਐ ।

(ਵਾਰ ਸਤਾ ਬਲਵੰਡ)

आगमन

1. थम्मे कोइ न साध विनु साधु न दिसै जग विच कोआ।
धरम धोल पुकारै तलै खड़ोआ। (भाई गुरदास)

2. सुणी पुकार दातार प्रभु गुर नानक जग मांहि पठाइआ।

3. कलि तारण गुर नानक आया। (भाई गुरदास)

4. सति गुर नानक प्रगटिआ मिटी धुन्ध जग चानण होआ।
जिऊं कर सूरज निकलिआ तारे छपे अन्धेर पलोआ।
(भाई गुरदास)

5. भया अनन्द जगत विच कलि तारन गुर नानक आया।
हिन्दु मुसलमान निवाइआ। (भाई गुरदास)

6. वलिओ चराग अंधार महि सब कल उधरी इक नाम धरम।
प्रगट सगल हर भवन महि जन नानक गुर पारब्रह्म।
(सवये मः ५)

7. कलिजुगु उधारिया गुरदेव।
मल मूत मूड़ जि मुधद होते सभि लगे तेरी सेव (आसा मः ५)

8. नानकि राज चलाइया सचु कोटु सताणी नीवदै।
लहणे धरिओनु छतु सिरि करि सिफती अमृत पीवदै।
(वार सता वलवण्ड)

9. जोति औहा जुगति साइ सहु काइआ फेर पलटीऐ।
(वार सता वलवण्ड)

अवतरण

१. (ऐसी स्थिति में) सृष्टि को कोई साधू ही सहारा दे सकता था प्रन्तु साधू कोई था नहीं। अतः धर्म रूपी धौल ने हिन्दू मिथिहास अनुसार) जो धरती का आसरा था, दातार प्रभु के पुकार की।

२. दातार प्रभु ने पुकार सुनी और गुरु नानक को संसार में भेजा।

३. ऐरे घोर युग में मनुष्यों के कल्याण के लिए गुरु नानक आये।

४. संसार में जो धुन्ध फैली हुई थी सतिगुरु नानक के प्रगट होने से जाती रही और जगत में प्रकाश हो गया। जिस प्रकार सूर्योदय के साथ अन्धकार दूर हो जाता है और सितारे छिप जाते हैं।

५. सारे जगत में खुशी की लहर दौड़ गई, कि इस कठिन समय में मानव जाति के उधार हित गुरु नानक प्रगट हो गए हैं। क्या हिन्दू और क्या मुसलमान सब उनकी शरण में आ गए है।

६. पारब्रह्म गुरु नानक के प्रगट होने से तिमिरमय संसार के घर घर में एक नाम का प्रकाश हुआ जिस द्वारा सारे जगत का उधार हुआ।

७. गुरु नानक देव ने उस कठिन समय में मनुष्यों का उधार किया और महा नीच मति हीन और मूर्ख लोग भी हे प्रभु! तेरी सेवा में जुट गये।

८. (गुरु) नानक ने धर्मका राज्य स्थापित किया और सत्य के दुर्ग का सुदृढ़ नीव पर निर्माण किया। तत्पश्चात गुरु-पदवीं का छत्र लहने (गुरु अंगद) के शीश पर सुशोभित किया। जिन्होंने वाहेगुरु की स्तुति गायन की और नाम का अमृत पिया।

९. (लहने के भीतर) वही ज्योति थी। जीवन युक्ति भी वही थी। स्वामी ने केवल शरीर का ही परिवर्तन किया था।

ADVENT

1. (Under such state of affairs) only the man of God could sustain the creation but such one was seen nowhere. Bull of Righteousness—the support underneath the earth (according to Hindu mythology) cried for help.
2. God, the Benefactor, heard the wailings of the suffering humanity and sent Guru Nanak to the world.
3. Guru Nanak came to ferry the people across the ocean of kali (dark age).
4. With the brilliant advent of Nanak—the true Guru—the mist vanished and the world was illumined, just as with the rising of sun stars are dimmed and darkness is dispelled.
5. There was rejoicing all the world over, that Guru Nanak had come for the rescue of the people in this kali age. Both Hindus and Muslims had to admit his greatness.
6. With the advent of Nanak, the God Guru, the world, enveloped in darkness, was illuminated through Thy Name and the whole age was saved.
7. The Divine Guru has emancipated (from filth) the people in this dark age and even those who were fools and blockheads and were most filthy, have all taken to Thy service.
8. Nanak established the (Lord's) empire and erected the fort of Truth on very strong foundation. He then placed the crown of Guruship on Lehna's (Guru Angad's) head, who in turn extolled and glorified the Lord and enjoyed the Nectar of the Name.
9. Divine Light was the same and same the Way of Life, The Master had merely changed his body.

ਸਰਗੁਣ ਸਰੂਪ

੧. ੧ਓ ਸਤਿਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ
ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ।
੨. ਸਾਹਿਬੁ ਮੇਰਾ ਏਕੋ ਹੈ, ਏਕੋ ਹੈ ਭਾਈ ਏਕੋ ਹੈ ।
ਆਪੇ ਮਾਰੇ ਆਪੇ ਛੋਡੈ ਆਪੇ ਲੇਵੈ ਦੇਇ ।
ਆਪੇ ਵੇਖੈ ਆਪੇ ਵਿਗਸੈ ਆਪੇ ਨਦਰਿ ਕਰੇਇ ।
(ਆਸਾ ਮ : ੧)

੩. ਸਰਬ ਜੋਤਿ ਤੇਰੀ ਪਸਰਿ ਰਹੀ ।
ਜਹ ਜਹ ਦੇਖਾ ਤਹ ਨਰਹਰੀ।
ਜੀਵਨ ਤਲਬ ਨਿਵਾਰਿ ਸੁਆਮੀ ।
ਅੰਧ ਕੂਪਿ ਮਾਇਆ ਮਨੁ ਗਾਡਿਆ ਕਿਉ ਕਰ ਉਤਰਉ
ਪਾਰਿ ਸੁਆਮੀ ।
ਜਹ ਭੀਤਰਿ ਘਟ ਭੀਤਰਿ ਬਸਿਆ ਬਾਹਰਿ ਕਾਹੇ ਨਾਹੀ ।
ਤਿਨ ਕੀ ਸਾਰ ਕਰੇ ਨਿਤ ਸਾਹਿਬੁ ਸਦਾ ਚਿੰਤ ਮਨ ਮਾਹੀ ।
ਆਪੇ ਨੇੜੈ ਆਪੇ ਦੂਰਿ ।
ਆਪੇ ਸਰਬ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰਿ।
ਸਤਿਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਅੰਧੇਰਾ ਜਾਇ।
ਜਹ ਦੇਖਾ ਤਹ ਰਹਿਆ ਸਮਾਇ. ।
(ਰਾਮਕਲੀ ਮ : ੧)

੪. ਆਪੇ ਭਾਂਡੇ ਸਾਜਿਅਨੁ ਆਪੇ ਪੂਰਣੁ ਦੇਇ ।
ਇਕਨੀ ਦੁਧੁ ਸਮਾਈਐ ਇਕ ਚੁਲ੍ਹੈ ਰਹਨਿ ਚੜੇ ।
ਇਕਿ ਨਿਹਾਲੀ ਪੈ ਸਵਨਿ ਇਕਿ ਉਪਰਿ ਰਹਿਨ ਖੜੇ ।
ਤਿਨਾ ਸਵਾਰੇ ਨਾਨਕਾ ਜਿਨ ਕਉ ਨਦਰਿ ਕਰੇ ।
(ਵਾਰ ਆਸਾ ਮ : ੧)

੫. ਵਡੇ ਕੀਆ ਵਡਿਆਈਆ ਕਿਛੁ ਕਹਣਾ ਕਹਣੁ ਨ ਜਾਇ।
੬. ਸੋ ਕਰੈ ਜਿ ਤਿਸੈ ਰਜਾਇ। (ਵਾਰ ਆਸਾ ਮ : ੧)

सरगुण सरूप

1. ੧ ओंकार सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु
   अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ।
2. साहिबु मेरा एको है, एको है भाई एको है ।
   आपे मारे आपे छोड़ै आपे लेवै देइ ।
   आपे वेखै आपे विगसै आपे नदरि करेइ । (आसा मः १)
3. सरब जोति तेरी पसरि रही ।
   जह जह देखा तह नरहरी ।
   जीवन तलब निवारि सुआमी ।
   अन्ध कूप माइआ मनु गाडिआ किउ कर उतरउ पारि सुआमी ।
   जह भीतरि घट भीतरि बसिआ बाहरि काहे नाही ।
   तिन की सार करे नित साहिबु सदा चिन्त मन माही ।
   आपे नेड़े आपे दूरि ।
   आपे सरब रहिआ भरपूरि ।
   सतिगुरू मिलै अन्धेरा जाइ ।
   जह देखा तह रहिआ समाइ । (रामकली मः १)
4. आपे भांडे साजिअनु आपे पूरणु देइ ।
   इकनी दुधु समाईऐ इकि चुलै रहनि चड़े ।
   इकि निहाली पैं सवनि इकि उपरि रहनि खड़े ।
   तिना सवारे नानका जिन कउ नदरि करे । (वार आसा मः १)
5. वडे कीआ वडिआइया किछु कहणा कहणु न जाइ ।
6. सो करै जि तिसै रजाइ । (वार आसा मः १)

सरगुण स्वरूप

१. अकाल पुरुष वाहेगुरू (निर्गुण तथा सर्गुण स्वरुप) एक ही है। वह सदैव स्थिर सत्य है। उसे किसी का भय नही न किसी के संग वैर भावना है। वह मृत्यु-रहित अस्तित्व है। वह जोनि में नहीं पड़ता। उसका अस्तित्व स्वयं से है। प्रभु का मिलाप गुरू-कृपा द्वारा होता है।

२. मेरा स्वामी वाहेगुरू एक ही है। केवल एक, जिसका कोई प्रतिपक्षी नहीं। वह आप ही मारने और बचाने वाला है। आप ही दाता है और देकर लौटा लेने वाला भी आप ही है। अपनी रचना के भीतर बैठा इसे निहारता और प्रफुल्लित होता है' और स्वयं ही उस पर अनुकम्पा करता है।

३. हे वाहेगुरू। हर स्थान पर तेरी ज्योति रम रही है। जिधर निहारता हूँ तू ही तू समाया हुआ है। परन्तु मेरा मन माया की तृष्णा के अन्धेरे कूप में फंसा हुआ है। हे मेरे स्वामी! किस प्रकार तृष्ण का निवारण हो और मेरा पार उतारा हो। जो मनुष्य उस स्वामी को अपने अन्त:करण में अनुभव करते हैं निश्चय ही वह उन्हें बाहर भी दिखाई देता है। और वह इस बात के दृढ़-विश्वासी हैं कि वह उनकी सदैव सम्भाल करता है और उनका ध्यान रखता है। वह निकट और दूर, हर स्थान पर व्यापक है। परन्तु सब स्थानों पर तभी ब्यापक प्रतीत होता है, यदि सतिगुरू मिले और वह अज्ञानता का तिमिर नष्ट कर देवे।

४. वाहेगुरू ने शरीर रूपी पात्र आप ही बनाए हैं और वह आप ही इनको भरता है।

कुछ पात्रों में दूध समाया हुआ है और कुछ दहकते रहते हैं। कुछ लोग नर्म गदेलों की सेजा पर निन्द्रा का आनन्द ले रहे है और कुछ उनके सेवक बन कर खड़े हैं परन्तु वास्तव में संवारे हुए वही समझो जिन पर वाहेगुरू की कृपा हो जावे वह जिसे चाहे संवार देवे।

५. महान वाहेगुरू की अपार महानता अकथनीय है।

६. जो कुछ उसे रूचित है, वह वही करता है।

GOD-HEAD

1. There is hut one God (Manifested and Unmanifested) Eternal Divine Spirit, the Creator, All pervading Supreme Being without fear, without enmity, Immortal Reality Unborn, Self-existent, Realised through Guru's Grace.
2. He is the Singular Lord, the only one Master without a second, my brother ! It is He alone who controls Death and Life, who gives and takes away what He has given. He is the only observer of what He has created and then enjoys His creation.
3. Thy Light, O'Lord ! pervades the whole existence. Wither-so-ever I turn I see the Master. My mind is fixed up in the blind well of wordly allurements (Maya.) How may I ferry across, Rid Thou me O'Lord ! of the base allurements. They who see Him within (their hearts) surly find the Lord outside as well and it is their firm belief that Lord takes care of them and thinks of their welfare always. He Himself is near as well as afar and fills all the places, but it is only by meeting the true Guru that the darkness is dispelled and He is then seen everywhere.
4. The Lord Himself has fashioned the vessels and Himself He fills them. Into some is poured the milk and some remain put on the oven. Some are provided with quilts to lie on and some stand by and serve them. Nanak, the Master bedecks those on whom He bestows His Grace.
5. The Glories of the Great Master are indescribable.
6. Only His Will prevaileth.

ਪਛਾਣ

੧. ਕਿਵ ਸਚਿਆਰਾ ਹੋਈਐ ਕਿਵ ਕੂੜੈ ਤੁਟੈ ਪਾਲਿ
ਹੁਕਮ ਰਜਾਈ ਚਲਣਾ ਨਾਨਕ ਲਿਖਿਆ ਨਾਲਿ ।
(ਜਪੁਜੀ)

੨. ਸਚੁ ਤਾਂ ਪਰੁ ਜਾਣੀਐ ਜਾ ਰਿਦੈ ਸਚਾ ਹੋਇ
ਕੂੜ ਕੀ ਮਲੁ ਉਤਰੈ ਤਨੁ ਕਰੇ ਹਛਾ ਧੋਇ ।
ਸਚੁ ਤਾਂ ਪਰੁ ਜਾਣੀਐ ਜਾ ਸਚਿ ਧਰੇ ਪਿਆਰੁ ।
ਨਾਉ ਸੁਣਿ ਮਨੁ ਰਹਸੀਐ ਤਾ ਪਾਏ ਮੋਖ ਦੁਆਰ ।
ਸਚੁ ਤਾ ਪਰੁ ਜਾਣੀਐ ਜਾ ਜੁਗਤਿ ਜਾਣੈ ਜੀਉ ।
ਧਰਤਿ ਕਾਇਆ ਸਾਧਿ ਕੈ ਵਿਚਿ ਦੇਇ ਕਰਤਾ ਬੀਉ ।
(ਵਾਰ ਆਸਾ ਮ : ੧)

੩. ਸਚਹੁ ਓਰੈ ਸਭ ਕੋ ਉਪਰ ਸਚੁ ਆਚਾਰ ।
(ਸਿਰੀ ਰਾਗ ਮ :੧)

੪. ਸੁਚਿ ਹੋਵੈ ਤਾਂ ਸਚੁ ਪਾਈਐ ।

੫. ਸੂਚੇ ਸੇਈ ਨਾਨਕਾ ਜਿਨ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਸੋਇ ।
(ਵਾਰ ਆਸਾ)

੬. ਜਾਤੀ ਦੈ ਕਿਆ ਹਥਿ ਸਚੁ ਪਰਖੀਐ ।
(ਮਾਝ ਵਾਰ ਮ : ੧)

੭. ਸੋ ਜੀਵਿਆ ਜਿਸੁ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਸੋਇ ।
ਨਾਨਕ ਅਵਰੁ ਨ ਜੀਵੈ ਕੋਇ ।
ਜੇ ਜੀਵੈ ਪਤਿ ਲਥੀ ਜਾਇ ।
ਸਭੁ ਹਰਾਮੁ ਜੇਤਾ ਕਿਛੁ ਖਾਇ ।
(ਮਾਝ ਵਾਰ ਮ : ੧)

੮. ਖਸਮ ਵਿਸਾਰ ਕੀਏ ਰਸ ਭੋਗ-
ਤਾ ਤਨਿ ਉਠਿ ਖਲੋਇ ਰੋਗ ।
(ਮਲਾਰ ਮ : ੧)

੯. ਘਾਲਿ ਖਾਇ ਕਿਛੁ ਹਥਹੁ ਦੇਇ ।
ਨਾਨਕ ਰਾਹੁ ਪਛਾਣਹਿ ਸੇਇ ।
(ਸਾਰੰਗ ਵਾਰ ਮ : ੧)

किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि ।
हुकमि रजाई चलना नानक लिखिआ नालि । (जपुजी)

2. सचु तां परु जाणीऐ जा रिदै सचा होइ ।
कूड़ की मलु उतरै तनु करे हछा धोइ ।
सचु ता परु जाणीऐ जा सचि धरे पिआरु ।
नाउ सुणि मनु रहसीऐ ता पाए मोख दुआरु
सचु ता परु जाणीऐ जा जुगति जाणै जीउ ।
धरति काइआ साधि कै विचि देइ करता बीउ ।
(वार आसा मः १)

3. सचहु उरे सभ को ऊपर सचु आचार । (सिरी राग मः १)

4. सुचि होवै ता सचु पाईऐ ।

5. सूचे सेई नानका जिन मनि वसिआ सोइ । (वार आसा)

6. जाति दै किआ हथि सचु परखीऐ । (माझ वार मः १)

7. सो जीविआ जिसु मनि वसिआ सोइ ।
नानक अवरु न जीवै कोइ ।
जे जीवे पति लथी जाइ ।
सभु हरामु जेता किछु खाइ । (माझ वार मः १)

8. खसम विसार कीए रस भोग-ता तनि उठि खलोइ रोग ।
(मलार मः १)

9. घालि खाइ किछु हथहु देइ ।
नानक राहु पछाणहि सेइ । (सारंग वार मः १)

पहचान

१. कस प्रकार सचियार (सत्यवादी) बना जावे और अहं का पर्दा किस प्रकार हटे ? वाहेगुरू की रजा (इच्छा) में रहने से ही ऐसा हो सकता है। सतगुरु का आदेश है कि वाहेगुरु की रजा हर मनुष्य के लिये स्वयं: अंकित है।

२. किसी को सचयारी तभी समझना चाहिये यदि उसके हृदय में सत्य का नवास हो गया हो और उसके बाहर भीतर से झूठ की मैल धूल गई हो। किसी को सत्य पर सक्रिय तभी समझना चाहिये यदि वह सच्चे नाम को हृदय से प्यार करता हो, और सत्यनाम का स्वर सुन कर उसका मन खिल उठता हो। मोक्ष का द्वार भी तभी खुलता है।

किसी को सत्य की ओर अग्रसर तभी समझो, यदि उसे जीवन युक्ति का ज्ञान हो गया होऔर वह शरीर रूपी धरती को संवार कर उसमें नाम का बीज बोता हो।

३. सत्य सब से अधिक मुल्यवान है, परन्तु सत्यमई जीवन सत्य से भी उत्तम है।

४. मन शुद्धता से ही सत्य की प्राप्ति होती है।

५. जो हृदय वाहेगुरु की याद में सम्पन्न है, वह निर्मल हो जाता है।

६. यह मत देखो कि कोई उच्च जाति का है या नहीं किन्तु यह परखो की उसके अन्तः करण में कितना सत्य है।

७. वास्तव में जीवित वही समझो जो वाहेगुरू की याद में जीवित है। अन्य सभी मृतक हैं। यदि कोई जोवित भी है तो अपमानित हो कर जायेगा, क्योंकि पदार्थो के दाता को भूल कर वह हराम खाता है।

८. स्वामी को भुला कर भोगे गए उपभोग, शरीर को रोगी बना देते हैं।

९. केवल उच्च मनुष्य को ही उत्तम मार्ग का परिचय होगा, जो खून पसीने की कमाई करता है और अपनी कमाई को बांट कर खाता है।

REALISATION

1. How to attain the Truth and remove the veil of Falsehood? By attuning (ourselves) to the Divine will. The will is ingrained in our being, says Nanak.

2. Consider him alone as true, in whose heart Truth abides, and whose heart and body are cleansed of the filth of Falsehood. Consider him alone as true, who loves the True One and who gets enraptured on hearing the Name, he then attains Riddance. Consider him alone as true, who knows the true way of Life. He prepares the land of body and sows therein the seed of the Creator's Name.

3. Truth is higher than everything else, hut higher still is truthful living.

4. The True One is realised through the purity of the soul.

5. Nanak, pure are they in whose mind resides the Lord.

6. Caste has no claim. Assess a man from his truthfulness.

7. He alone lives in whom resides the Master, none else, O' Nanak ! is really alive. If such a man lives he is always dishonoured, hecause all that he feeds on is a forbidden (unlawful) food.

8. Forgetting the Master man indulges in sensuous pleasures and therefore he becomes victim of hodily diseases.

9. Only those who toil to earn their livlihood and then share their earnings (with the needy) recognise the right path.

ਛੁਟਕਾਰਾ

੧. ਵਿਚਿ ਦੁਨੀਆ ਸੇਵ ਕਮਾਈਐ ।
ਤਾ ਦਰਗਹ ਬੈਸਣੁ ਪਾਈਐ ।
ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਬਾਹ ਲੁਡਾਈਐ ।
(ਸਿਰੀ ਰਾਗ ਮ : ੧)

੨. ਬਾਬਾ ਬੋਲੀਐ ਪਤਿ ਹੋਇ ।
ਊਤਮ ਸੇ ਦਰਿ ਊਤਮ ਕਹੀਅਹਿ ਨੀਚ ਕਰਮ ਬਹਿ ਰੋਇ ।
(ਸਿਰੀ ਰਾਗ ਮ : ੧)

੩. ਜੇ ਰਤੁ ਲਗੈ ਕਪੜੈ ਜਾਮਾ ਹੋਇ ਪਲੀਤੁ
ਜੋ ਰਤੁ ਪੀਵੈ ਮਾਣਸਾ ਤਿਨੁ ਕਉ ਨਿਰਮਲ ਚੀਤੁ ।
ਨਾਨਕ ਨਾਉ ਖੁਦਾਇ ਕਾ ਦਿਲਿ ਹਛੈ ਮੁਖਿ ਲੇਹੁ ।
ਅਵਰਿ ਦਿਵਾਜੇ ਦੁਨੀ ਕੇ ਝੂਠੇ ਅਮਲ ਕਰੇਹੁ ।
(ਵਾਰ ਮਾਝ ਮ : ੧)

੪. ਹਕੁ ਪਰਾਇਆ ਨਾਨਕਾ ਉਸੁ ਸੂਅਰ ਉਸੁ ਗਾਇ ।
ਗੁਰੁ ਪੀਰ ਹਾਮਾ ਤਾ ਭਰੇ ਜਾ ਮੁਰਦਾਰੁ ਨ ਖਾਇ ।
ਗਲੀ ਭਿਸਤਿ ਨ ਜਾਈਐ ਛੁਟੈ ਸਚੁ ਕਮਾਇ ।
(ਵਾਰ ਮਾਝ ਮ : ੧)

੫. ਜਿਤੁ ਬੋਲਿਐ ਪਤਿ ਪਾਈਐ ਸੋ ਬੋਲਿਆ ਪਰਵਾਣੁ ।
ਫਿਕਾ ਬੋਲਿ ਵਿਗੁਚਣਾ ਸੁਣਿ ਮੂਰਖ ਮਨ ਅਜਾਣ ।
(ਸਿਰੀ ਰਾਗ ਮ : ੧)

੬. ਮਿਠਤੁ ਨੀਵੀ ਨਾਨਕਾ ਗੁਣ ਚੰਗਿਆਈਆ ਤਤੁ ।
(ਵਾਰ ਆਸਾ)

੭. ਮੁੰਧੇ ਗੁਣ ਹੀਣੀ ਸੁਖੁ ਕੇਹਿ ।
ਪਿਰੁ ਰਲੀਆ ਰਸਿ ਮਾਣਸੀ ਸਾਚਿ ਸਬਦਿ ਸੁਖੁ ਨੇਹਿ ।
(ਸਿਰੀ ਰਾਗ ਮ : ੧)

छुटकारा

1. विचि दुनिया सेव कमाइऐ।
   ता दरगह बैसणु पाइऐ।
   कहु नानक बाह लुडाईऐ। (सिरी राग मः १)

2. बाबा बोलीऐ पति होइ।
   ऊतम से दरि ऊत्तम कहीअहि नीच करम बहि रोइ।
   (सिरी राग मः १)

3. जे रतु लगै कपड़ै जामा होइ पलीतु।
   जो रतु पीवै माणमा तिनु किउ निरमल चीतु।
   नानक नाउ खुदाइ का दिलि हछै मुखि लेहु।
   अवरि दिवाजे दुनी के झूठे अमल करेहु। (वार माझ मः १)

4. हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ।
   गुरु पीर हामा ता भरे जा मुरदारु न खाइ।
   गली भिसति न जाईऐ छुटै सचु कमाइ। (वार माझ मः १)

5. जितु बोलिऐ पति पाइऐ सो बोलिआ परवाणु।
   फिका बोलि विगुचणा सुणि मूरख मन अजाण।
   (सिरी राग मः १)

6. मिठतु नीवी नानका गुण चंगिआईआ ततु। (वार आसा)

7. मुन्धे गुण होणी सुखु केहि।
   पिरु रलीआ रसि माणसी माचि सबदि सुखु नेहि।
   (सिरी राग मः १)

।नावता

१. इस संसाम में सेवा कर, तभी वाहेगुरु की दरगाह में सम्मान प्राप्त होगा और तू बांह लुढ़ाता हुआ खुशी २ जावेगा।

२. हे मित्र, ऐसे बोल बोलो, जिनके उच्चारण से सन्मान मिले। ऐसे मनुष्य ही दर्गाह में उत्तम गिने जायेंगे। दुशकर्मी लोग वहां पश्चाताप करेंगे।

३. यदि वस्त्र रक्त-रंजित हो जावें तो अपवित्र हो जाते हैं। फिर यदि कोई मनुष्यों का रक्त-शोषित करता है, उसका हृदय किस प्रकार निर्मल रह सकता है। खुदा का नाम शुद्ध हृदय एवं जिह्वा द्वारा जपो। अन्य सभी प्रकार के कर्म और निरार्थक दिखावे व्यर्थ हैं।

४. दूसरे का अधिकार छीन कर स्वयंः ग्रहण करना हिन्दू के लिये गाय और यवन के लिये सूअर भक्षण के समान है। ईश्वर की दरगाह में गुरु अथवा पैगम्बर तभी साक्षी भरेगा यदि पराय अधिकार नहीं छीना। आगे केवल बातों द्वारा स्वर्ग की प्राप्ति नहीं होती। केवल सत्य की कमाई मोक्ष दिलवा सकती है।

५. वही बोल प्रवनित है जिनके उच्चारण से जनता में सम्मान हो ऐ मतिहीन मूर्ख मन ! यह बात घ्यान पूर्वक श्रवण कर ले कि कटु-शब्द अपमान का कारण बन जाते है।

६. जीभ की मिठास तथा निम्रता सर्वोच भलाई (नेकी) है।

७. हे स्त्री ! शुभ गुणों के बिना सुख कहां ? प्रसन्न चित्त पति तुझ पर तभी मुग्ध होगा यदि तेरे हृदय का सत्य तेरे मीठे बचन और तेरा प्रेम उसकी सुखद प्रतीत होगा।

DELIVERANCE

1. By rendering service to humanity thou shalt get a seat (of respect) in the Master's Court and shalt swing thy arm happily.

2. O' Brother, speak in a way that may bring thee honour. Good are they who are styled good in the Master's Court, Evil-doers sit and bewail.

3. A stain of blood pollutes the garment ; then how can their minds be pure, who suck the blood of human heings. Nanak ! utter you the name of God with wholesome heart, else all that you practise will be mere ostentation of your false actions.

4. Nanak, Usurpation of others dues means pork for the one (Muslim) and beaf for the other (Hindu) The Guru and the Prophet will stand by only if man eats no carrion. By mere words of mouth man goes not to Heaven. Deliverance is only from the practice of truth.

5. Talk such as brings respect, for that alone is acceptable. Hearken O'foolish ignorant mind, unpalatable words bring humiliation.

6. Nanak ! Sweetness of tongue and humility are the essence of all Virtues.

7. O' Bride ! What happiness is therc without Virtuc ? Thy Husband will relish thy company only if thou cultivatest in thee truthfulness (sweet) speech and love.

ਸਮਾਈ

੧. ਮਨ ਰੇ ਕਿਉ ਂ ਛੂਟਹਿ ਬਿਨੁ ਪਿਆਰੁ
ਗੁਰਮੁਖਿ ਅੰਤਰਿ ਰਵਿ ਰਹਿਆ ਬਖਸੇ ਭਗਤਿ ਭੰਡਾਰ ।
(ਸਿਰੀ ਰਾਗ ਮ : ੧)

੨. ਪ੍ਰਿਉ ਸੇਵਹੁ ਪ੍ਰਭ ਪ੍ਰੇਮ ਅਧਾਰਿ ।
ਗੁਰ ਸਬਦੇ ਬਿਖੁ ਤਿਆਸ ਨਿਵਾਰਿ ।
(ਬਸੰਤ ਮ : ੧)

੩. ਨਾਨਕ ਲਗੀ ਤੁਰਿ ਮਰੈ ਜੀਵਣ ਨਾਹੀ ਤਾਣੁ ।
ਚੋਟੈ ਸੇਤੀ ਜੇ ਮਰੈ ਲਗੀ ਸਾ ਪਰਵਾਣੁ ।
(ਸਲੋਕ ਮ : ੧)

੪. ਜਉ ਤਉ ਪ੍ਰੇਮ ਖੇਲਣ ਕਾ ਚਾਉ ।
ਸਿਰੁ ਧਰਿ ਤਲੀ ਗਲੀ ਮੇਰੀ ਆਉ ।
ਇਤੁ ਮਾਰਗਿ ਪੈਰੁ ਧਰੀਜੈ ।
ਸਿਰੁ ਦੀਜੈ ਕਾਣਿ ਨਾ ਕੀਜੈ ।
(ਸਲੋਕ ਮ : ੧)

੫. ਮਰਣੁ ਨ ਮੰਦਾ ਲੋਕਾ ਆਖੀਐ ਜੇ ਮਰਿ ਜਾਣੈ ਐਸਾ ਕੋਇ ।
ਸੇਵਿਹੁ ਸਾਹਿਬੁ ਸੰਮ੍ਰੁਥੁ ਆਪਣਾ ਪੰਥੁ ਸੁਹੇਲਾ ਆਗੈ ਹੋਇ ।
ਪੰਥੁ ਸੁਹੇਲੈ ਜਾਵਹੁ ਤਾ ਫਲੁ ਪਾਵਹੁ ਆਗੈ ਮਿਲੈ ਵਡਾਈ ।
ਭੇਟੈ ਸਿਉ ਜਾਵਹੁ ਸਚਿ ਸਮਾਵਹੁ ਤਾਂ ਪਤਿ ਲੇਖੈ ਪਾਈ ।
(ਵਡਹੰਸ ਮ : ੧)

੬. ਮਰਣੁ ਮੁਣਸਾ ਸੂਰਿਆ ਹਕੁ ਹੈ ਜੋ ਹੋਇ ਮਰਨਿ ਪਰਵਾਣੇ ।
ਸੂਰੇ ਸੋਈ ਆਗੈ ਆਖੀਅਹਿ ਦਰਗਹ ਪਾਵਹਿ ਸਾਚੀ ਮਾਣੇ ।
(ਵਡਹੰਸ ਮ : ੫)

੭. ਜਿਨੀ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਗਏ ਮਸਕਤਿ ਘਾਲਿ ।
ਨਾਨਕ ਤੇ ਮੁਖ ਉਜਲੇ ਕੇਤੀ ਛੁਟੀ ਨਾਲਿ ।
(ਜਪੁਜੀ)

समाई

1. मन रे किउ छूटहि बिनु पिआरु।
गुरमुखि अन्तरि रवि रहिआ बखसे भगति भण्डार।
(सिरी राग मः १)

2. प्रिउ सेवहु प्रभु प्रेम अधारि।
गुर सबदे बिखु तिआस निवारि। (बसन्त मः १)

3. नानक लगी तुरि मरै जीवण नाही ताणु।
चोटै सेती जे मरै लगी सा परवाणु। (सलोक मः १)

4. जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ।
सिरु धरि तली गली मेरी आउ।
इत मारगि पैरु धरीजै। सिरु दीजै काणि ना कीजै।
(सलोक मः १)

5. मरणु न मदा लोका आखीऐ जे मरि जाणै ऐसा कोइ।
सेविहु साहिबु संअथु आपणा पन्थु सुहेला आगै होइ।
पंथु सुहेलै जावहु ता फलु पावहु आगै मिलै वडाई।
भेटै सिउ जावहु सचि समावहु तां पति लेखै पाई।
(वडहंस मः १)

6. मरणु मुणसा सूरिआ हकु है जां होइ मरनि परवाणो।
सूरे सेई आगै आखी अहि दरगह पावहि साची माणो।
(वडहंस मः १)

7. जिनी नामु धियाइया गए मसकति घालि।
नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि। (जपुजी)

समाई

१. हे मन ! प्रेम के बिना तेरा छुटकारा नहीं हो सकता। भक्ति के भण्डार उन गुर मुखों के लिये खुले हैं जिनका हृदय वाहेगुरु के प्रेम से भरपूर है।

२. इसी लिये प्रेम को आधार बना कर प्रिय प्रभु की सेवा कर और गुरु के शब्द द्वारा विष्य विकारों की तृष्णा को दूर कर ले।

३. प्रेम का आघात उसी का प्रवानित है जो प्रियतम के प्यार में तुरन्त अपना अस्तित्व भूल जाये (अहं की मृत्यु हो जावे) और आघात लगते ही उसका निज-सम्मान तथा सामर्थ (अहं) समाप्त हो जाये।

४. यदि तेरे हृदय में प्यार का खेल खेलने का चाव है तो पहले अपना शीश-काट कर तली पर टिका ले और फिर मेरी गली में प्रवेश कर। इस पथ का यात्री बनना है तो बिना झिझक सिर देने के लिये तत्पर रह।

५. ऐ लोगो ! यदि कोई ऐसी मौत मरता है तो उसका शोक ना करो, क्योंकि अपने सर्वशक्तिमान स्वामी की अहं मार कर की गई सेवा द्वारा ही आगे का मार्ग सुगम होता है, और वहां जाने पर मान सम्मान मिलता है। शीश की भेन्ट ले कर जाने से सत्य अन्त-करण में समाया होता है और दरगाह में सम्मान होता है।

६. प्रवानित मृत्यु से मरना, शूरवीर अपना अधिकार समझते हैं। (इस कारण से शहीदी प्राप्त करने का चाव उत्पन्न होता है) वास्तविक शूरवीर कहलाने के अधिकारी वही हैं और उन्हे ही सच्चो दरगाह में सम्मान मिलता है।

७. जिन्होंने अपना ध्यान वाहेगुरु के साथ लगाया है और परिश्रम किया है वे उज्जल मुख होकर यहां से जायेंगे और उनके साथ लग कर और भी अनेकों बन्धनों से मुक्त हो जाएंगे।

ATONEMENT

1. O' my mind ! How shalt thou be delivered without Love ? God bestows bountifully His devotional service, on those pious persons whose hearts are saturated with His Love.
2. Make love, therefore, the basis of thine Beloved's service, and remove thy thirst for vicious propensities through the Shabad of the Guru.
3. That love alone is accepted, which at the very outset makes the lover forget his self and does away with his ego.
4. If thou art keen to play the game of Love, come on to my path with thy head on thy palm. If thou settest thy foot on this path, lay down thy head without hesitation.
5. It is not the least despisable, if one courts such a death, for it is only the selfless service of the Omnipotent Master that makes thy onward journey comfortable. Thou shalt be honoured and rewarded if thou followest that cherished path. Thou shalt be one with Truth, if thou goest with an offering (of thy head) and honour will go to thy credit.
6. Death is the privilege of the brave if they die for an approved cause and they alone will be denominated as heroes and will be held in high esteem in the Master's Court.
7. Those, who have concentrated on the Name and have departed after putting in hard labour, (on that account), shall go with bright faces and they will atone for many others.

ਮੰਞ ਕੂਚਜੀ

ਮੰਞ ਕੂਚਜੀ ਅੰਮਾਵਣਿ ਡੋਸੜੇ ਹਉਂ ਕਿਉਂ ਸਹੁ ਰਾਵਣਿ ਜਾਉ ਜੀਉ ।
ਇਕ ਦੂ ਇਕਿ ਚੜੰਦੀਆਂ ਕਉਣੁ ਜਾਣੈ ਮੇਰਾ ਨਾਉ ਜੀਉ ।
ਜਿਨੀ ਸਖੀ ਸਹੁ ਰਾਵਿਆ ਸੇ ਅੰਬੀ ਛਾਵੜੀਏਹਿ ਜੀਉ ।
ਸੇ ਗੁਣ ਮੰਞ ਨਾ ਆਵਨੀ ਹਉ ਕੈ ਜੀ ਦੋਸ ਧਰੇਉ ਜੀਉ ।
ਕਿਆ ਗੁਣ ਤੇਰੇ ਵਿਥਰਾ ਹਉ ਕਿਆ ਕਿਆ ਘਿਨਾ ਤੇਰਾ ਨਾਉ ਜੀਉ ।
ਇਕਤੁ ਟੋਲਿ ਨ ਅੰਬੜਾਂ ਹਉ ਸਦ ਕੁਰਬਾਣੈ ਤੇਰੇ ਜਾਉ ਜੀਉ ।
ਸੁਇਨਾ ਰੁਪਾ ਰੰਗਲਾ ਮੋਤੀ ਤੈ ਮਾਣਿਕੁ ਜੀਉ ।
ਸੇ ਵਸਤੂ ਸਹਿ ਦਿਤੀਆ ਮੈ ਤਿਨ ਸਿਉ ਲਾਇਆ ਚਿਤੁ ਜੀਉ ।
ਮੰਦਰ ਮਿਟੀ ਸੰਦੜੇ ਪਥਰ ਕੀਤੇ ਰਾਸਿ ਜੀਉ ।
ਹਉ ਏਨੀ ਟੋਲੀ ਭੁਲੀਅਸੁ ਤਿਸੁ ਕੰਤ ਨ ਬੈਠੀ ਪਾਸਿ ਜੀਉ ।
ਅੰਬਰਿ ਕੂੰਜਾਂ ਕੁਰਲੀਆ ਬਗ ਬਹਿਠੇ ਆਇ ਜੀਉ ।
ਸਾਧਨ ਚਲੀ ਸਾਹੁਰੈ ਕਿਆ ਮੁਹੁ ਦੇਸੀ ਅਗੈ ਜਾਇ ਜੀਉ ।
ਸੁਤੀ ਸੁਤੀ ਝਾਲੁ ਥੀਆ ਭੁਲੀ ਵਾਟੜੀਆਸੁ ਜੀਉ ।
ਤੈ ਸਹ ਨਾਲਹੁ ਮੁਤੀਅਸੁ ਦੁਖਾਂ ਕੂੰ ਧਰੀਆਸੁ ਜੀਉ ।
ਤੁਧੁ ਗੁਣ ਮੈ ਸਭਿ ਅਵਗਣਾ ਇਕ ਨਾਨਕ ਕੀ ਅਰਦਾਸਿ ਜੀਉ ।
ਸਭਿ ਰਾਤੀ ਸੋਹਾਗਣੀ ਮੈ ਡੋਹਾਗਣਿ ਕਾਈ ਰਾਤ ਜੀਉ ।

ਸੂਹੀ ਮਹਲਾ ੧

मंझ कुचजी

मंझ कुचजी अंमावणि डीसड़े हंउ किउ-सहु रावणि जाउ जीउ।
इक दू इकि चड़दोआं कडणु जाणै मेरा नाउ जीउ।
जिनी सखी सहु राविआ से अम्बो छावड़ीएहि जीउ।
से गुण मंझु ना आवनी हउ कै जी दोस धरेउ जीउ।
किआ गुण तेरे विथरा हउ किआ किआ घिना तेरा नाउ जीउ।
इकतु टोलि न अम्बड़ा हउ सद कुरबाणै तेरे जाउ जीउ।
सुइना रुपा रंगला मोती तै माणिकु जीउ।
से वसतु सहि दितीआ मैं तिन सिउ लाइआ चितु जीउ।
मंदर मिटी सन्दड़ पथर कीते रासि जीउ।
हउ एनो टोली भुलोअसु तिमु कंत न बैठी पासि जीउ।
अंबरि कूंजां कुरलीआं वग बहिठे आइ जीउ।
साजन चली साहुरै किआ मुहु देसी अगै जाइ जीउ।
सुती सुती झालु थीआ भुलो वाटड़ोआसु जीउ।
तै सह नालहु मुतीअसु दुखां कूं धरोआसु जीउ।
तुधु गुण मैं सभि अवगणां इक नानक की अरदासि जीउ।
सभि राती सोहागणी मैं डाहागणि काई रात जीउ।

सूही महला १

मैं अशिष्ट स्त्री !

१. मेरे पास कोई शिष्टता नहीं। अगणित दोषों से भरपूर हूं। मैं किस मूंह से पति को प्रसन्न करने जाऊं। वहां तो एक से एक बढ़ कर है। मैं वहां किस गिनती में हूं। जिन सखियों ने प्रियतम पति का आनन्द प्राप्त किया है, वे पतिप्रेम की घने वृक्षों वाली छाया में हैं। (परन्तु किसी का क्या दोष ! जब मुझ में उनके समान गुण ही नहीं तो मैं किसे दोष दूं।

हे प्रियतम ! मैं तेरे किन किन गुणों का कथन करूं। और तेरी क्या बढ़ाई करूं ? मैं तो तेरे एक गुण को भी ग्रहण नहीं कर सकतीं। मैं तुझ पर अनेकों बार बलिहारी हूं।

(मेरी अवस्था तो यह है कि) जिस स्वामी ने मुझे सोना चांदी, हीरे मोती इत्यादि रंग-बिरंगे पदार्थ दिये, मैंने उसे भुला दिया और उन पदार्थों में ही मन लगा लिया। मिट्टी के मकान का (जिनकी अवधि कुछ भी नहीं थी) मैंने अति सुन्दर पत्थरों से (संगमरमर इत्यादि) भव्य निर्माण कर लिये और इनकी प्राप्ती में ऐसी खो गई कि इनके दाता स्वामी पति के पास आकर बैठी भी नहीं।

(अब ऐसी दशा हो गई है) अब मेरे शीश-रूपी आकाश मे श्वेद कूंजें पुकार रही हैं और सिर बगुलों के सरान दुग्ध हो गया है। स्त्री के ससुराल जाने की त्यारी हो चुकी है। परन्तु यह ससुराल में (प्रलोक में) क्या मूंह लेकर जावेगी ?

मेरी आयु की रात्री सोते सोते ही व्यतीत हो गई है। (मैंने प्रभु पति को मिलने का कोई साधन नहीं जुटाया) अब जब दिन निकल आया है तो (ज्ञात हुआ कि पति को मिलने का समय जा चुका है) मुझे कोई मार्ग दृष्टिगोचर नहीं होता। प्रियवर ! तुझ से बिछुड़ कर मैं दुखों के मुंह में आ गई हूं। तू गुणवान है और मैं अवगुण भरपूर हूँ। मिलाप किस प्रकार होवे)। मेरे प्रियतम मेरी तो अब यही बिनती है, तूने जहां सुहागवतीयों की सभी रातें मुहाबनी बना दी हैं, वहां केवल मात्र एक रात्रि का मिलन इस अभागिनी को भी प्रदान करदे !

O' MERITLESS ME

I have no merit. Countless are my sins. How shall I enjoy my Spouse ? He has many a bride-each better than the other, (while I am so insignificant) that no one even knows my name. They who enjoy the Spouse, are under His Mango-shade. But I have none of their Virtues, O' whom shall I then blame for this ? Thou hast, my Love, countless Merits and as many Names, How shall I describe these ? I cannot come up to even one of them, I am hence a sacrifice unto Thee a myriad times.

Thou hast given me gold, silver pearls and rubies which have enticed my heart with their glitter and forgetting Thee I have become devotedly attached to these. Short-lived mud houses decorated by me with marble and stones beguiled me away and I sat not by the side of the Spouse.

Over the skies (of my head) the swallows (of age) are crying and the white herons (hair) have appeared, I am preparing to leave for my in-laws, but how shall I acquit myself there ?

I slept away the whole night of my life, (and made no effort to meet my Love) and now that the day has dawned (and no time is left to meet Him) I feel I have missed the path and having remained separated from Thee-my Spouse, I have gathered nothing but suffering.

Thou art all Virtue and I am all sin (how could we then meet ?) The only thing left with me is my humble prayer :

"My Love, Thou hast blest all Thy brides with Thy Company all these nights, is not there a single night for a separated one like me ?"

ਤੜਪ

੧. ਚੇਤ ਬਸੰਤੁ ਭਲਾ ਭਵਰ ਸੁਹਾਵੜੇ ।
ਬਨ ਫੂਲੇ ਮੰਝ ਬਾਰਿ ਮੈ ਪਿਰੁ ਘਰਿ ਬਾਹੁੜੈ ।
ਪਿਰੁ ਘਰਿ ਨਹੀ ਆਵੈ ਧਨ ਕਿਉ ਸੁਖ ਪਾਵੈ
ਬਿਰਹਿ ਬਿਰੋਧ ਤਨੁ ਛੀਜੈ।
ਕੋਕਿਲ ਅੰਬਿ ਸੁਹਾਵੀ ਬੋਲੈ ਕਿਉ ਦੁਖੁ ਅੰਕਿ ਸਹੀਜੈ ।
ਭਵਰ ਭਵੰਤਾ ਫੂਲੀ ਡਾਲੀ ਕਿਉ ਜੀਵਾਂ ਮਰੁ ਮਾਏ ।
ਨਾਨਕ ਚੇਤਿ ਸਹਜਿ ਸੁਖੁ ਪਾਵੈ ਜੇ ਹਰਿ ਵਰੁ ਘਰਿ ਧਨ
ਪਾਏ ।

ਤੁਖਾਰੀ ਬਾਰਹ ਮਾਹ ਮਹਲਾ ੧

੨. ਸੁਣਿ ਨਾਹ ਪ੍ਰਭੂ ਜੀਉ ਏਕਲੜੀ ਬਨ ਮਾਹੇ ।
ਕਿਉ ਧੀਰੈਗੀ ਨਾਹ ਬਿਨਾ ਪ੍ਰਭੂ ਵੇਪਰਵਾਹੇ ।
ਧਨ ਨਾਹ ਬਾਝਹੁ ਰਹਿ ਨ ਸਾਕੈ ਬਿਖਮ ਰੈਣਿ ਘਣੇਰੀਆ।
ਨਹ ਨੀਦ ਆਵੈ ਪ੍ਰੇਮ ਭਾਵੈ ਸੁਣਿ ਬੇਨੰਤੀ ਮੇਰੀਆ ।
ਬਾਝਹੁ ਪਿਆਰੇ ਕੋਇ ਨ ਸਾਰੇ ਏਕਲੜੀ ਕੁਰਲਾਏ ।
ਨਾਨਕ ਸਾਧਨ ਮਿਲੈ ਮਿਲਾਈ ਬਿਨੁ ਪ੍ਰੀਤਮ ਦੁਖੁ ਪਾਏ ।

ਗਾਉੜੀ ਛੰਤ ਮਹਲਾ ੧

तड़प

1. चेत बसन्तु भला भवर सुहावड़े ।
बन फूले मंझ बारि मैं पिरु घरि बाहुड़े ।
पिरु घरि नहीं आवै धन किउ सुख पावै
बिरहि विरोध तनु छीजै ।
कोकिल अंबि सुहावी बोलै किउ दुखु अंकि सहीजै ।
भवर भवंता फूली डाली किउ जीवां मरु माए ।
नानक चेति सहजि सुखु पावै जे हरि वरु घरिघन पाए ।
तुखारी बारा माह महला १

2. सुणि नाह प्रभू जीउ एकलड़ी बन माहे ।
किउ धीरैगी नाह बिना प्रभ वेपरवाहे ।
धन नाह बाझहु रहि न साकै बिखम रैणि घणेरीआ ।
नह नीद आवै प्रेम भावै सुणि बेनती मेरीआ ।
बाझहु पिआरे कोइ न सारे एकलड़ी कुरलाए ।
नानक साधन मिलै मिलाई बिनु प्रीतम दुखु पाए ।
गउड़ी छंत महला १

तड़प

१. वसन्त ऋतु, चेत के महीने में (फूलों पर झुर्मुट डाले हुए) काले भंवरों का मन्डराना कितना सुहावना लगता है। बार की धरती में सारा वन सुगन्धी से प्रफुल्लित है। यह दृष्य मेरे मन की ठीस को तीव्र करता है। किसी प्रकार मेरा प्रियतम भी अचानक घर लौट आये! पति घर न आये तो स्त्री को धीरज किस प्रकार आ सकता है। वह तो विरह की पीड़ा में क्षीण है। इस पर आम के पेड़ से कोकिल की रस विभोर कूक भंवरे का फूलों की डालियों पर मस्ती में झूमना। (बिरह की शूल को और तीव्र करते हैं)। (हाय!) मैं यह दुख किस प्रकार सहन करूं। हे मेरी मां, यह सब देख कर मैं प्रियतम के बिना किस तरह जीवित रह सकती हूँ। चेत मास की सुहावनी ऋतु में स्थिर सुख तभी प्राप्त हो सकता है यदि स्त्री का प्रभु पति उसे आ मिले।

२. सुन हे प्रभु पति, इस बियाबान बन में मैं अकेली हूं। स्वामी पति के बिना मन धैर्य नहीं करता, परन्तु वह बड़ा बे परवाह है तेरे बगैर मैं किस प्रकार रह सकती हूं? सामने पर्वत समान दुर्गम रात्री दिखाई दे रही है। मेरी विनती सुनो, मेरे प्राण प्रिय तेरे बिना तो मेरी खबर-सार लेने वाला भी कोई नहीं। मैं रुदन कर रही हूं। अब तो प्रियतम तेरे मिलाए ही मिल सकती हूं और यदि प्रियतम तू न मिले तो मेरे लिये दुख ही दुख है।

YEARNINGS

1. How pleasant is the Spring month of Chet ! The black-bees are delightful to look at and the woods in the Bar, (land of my birth) are in their full blossom. Such environments kindle my acute longing to see my Spouse return home.

   There is no peace of mind for a bride whose spouse is not at home and she pines with pangs of separation. The koel sings melodiously from the mango tree, that reminds me of my Love causing me unbearable pain.

   The black-bee circumambulates the blooming boughs ; then how can I live, my mother, without Him.

   Nanak, the Bride would get equipoised in Chet, if her Spouse comes home.

2. Hearken me, Beloved Husband ! all alone am I in these woods. How can my mind be at rest if the Master is non-challant ?

   I cannot live without Thee, my Husband, while the most difficult night is ahead, nor have I a wink of sleep out of my love, listen to my entreaties. O' Lord !

   None else is there to look after and I am bewailing all alone. If thou willeth I may meet my Spouse, otherwise it is all pain and suffering.

ਨਾਨਕੁ ਬਉਰਾਨਾ

੧. ਮੁਲ ਖਰੀਦੀ ਲਾਲਾ ਗੋਲਾ ਮੇਰਾ ਨਾਉ ਸੁਭਾਗਾ ।
ਗੁਰ ਕੀ ਬਚਨੀ ਹਾਟਿ ਬਿਕਾਨਾ ਜਿਤੁ ਲਾਇਆ ਤਿਤੁ ਲਾਗਾ ।
ਤੇਰੇ ਲਾਲੇ ਕਿਆ ਚਤੁਰਾਈ ।
ਸਾਹਿਬੁ ਕਾ ਹੁਕਮੁ ਨ ਕਰਣਾ ਜਾਈ ।
ਮਾਂ ਲਾਲੀ ਪਿਉ ਲਾਲਾ ਮੇਰਾ ਹਉ ਲਾਲੇ ਕਾ ਜਾਇਆ ।
ਲਾਲੀ ਨਾਚੈ ਲਾਲਾ ਗਾਵੈ ਭਗਤਿ ਕਰਉ ਤੇਰੀ ਰਾਇਆ ।
ਪੀਅਹਿ ਤ ਪਾਣੀ ਆਣੀ ਮੀਰਾ ਖਾਹਿ ਤ ਪੀਸਣ ਜਾਉ ।
ਪਖਾ ਫੇਰੀ ਪੈਰ ਮਲੋਵਾ ਜਪਤ ਰਹਾ ਤੇਰਾ ਨਾਉ ।
ਲੂਣ ਹਰਾਮੀ ਨਾਨਕ ਲਾਲਾ ਬਖਸਿਹਿ ਤੁਧੁ ਵਡਿਆਈ ।
ਆਦਿ ਜੁਗਾਦਿ ਦਇਆਪਤਿ ਦਾਤਾ ਤੁਧੁ ਵਿਣੁ ਮੁਕਤਿ ਨ ਪਾਈ ।

(ਮਾਰੂ ਮ : ੧)

੨. ਕੋਈ ਆਖੈ ਭੂਤਨਾ ਕੋ ਕਹੈ ਬੇਤਾਲਾ ।
ਕੋਈ ਆਖੈ ਆਦਮੀ ਨਾਨਕ ਵੇਚਾਰਾ ।
ਭਇਆ ਦਿਵਾਨਾ ਸਾਹ ਕਾ ਨਾਨਕ ਬਉਰਾਨਾ ।
ਹਉ ਹਰਿ ਬਿਨੁ ਅਵਰੁ ਨਾ ਜਾਣਾ ।

(ਮਾਰੂ ਮ : ੧)

੩. ਭਉ ਤੇਰਾ ਭਾਂਗ ਖਲੜੀ ਮੇਰਾ ਚੀਤੁ ।
ਮੈਂ ਦੇਵਾਨਾ ਭਇਆ ਅਤੀਤੁ ।
ਕਰ ਕਾਸਾ ਦਰਸਨ ਕਾਂ ਭੂਖ ।
ਮੈਂ ਦਰ ਮਾਗਉ ਨੀਤਾ ਨੀਤ ।
ਤੁਉ ਦਰਸਨ ਕੀ ਕਰਉ ਸਮਾਇ ।
ਮੈਂ ਦਰ ਮਾਂਗਤੁ ਭੀਖਿਆ ਪਾਇ ।

(ਤਿਲੰਗ ਮ : ੧)

नानकु बउराना

1. मुल खरीदी लाला गोला मेरा नाउ सुभागा।
गुर की बचनी हाटि बिकाना जितु लाइआ तितु लागा।
तेरे लाले किआ चतुराई।
साहिब का हुकमु न करणा जाई।
मां लाली पिउ लाला मेरा हउ लाले का जाइआ।
लाली नाचै लाला गावै भगति करउ तेरी राइआ।
पीअहि त पाणी आणी मीरा खाहि त पीसण जाउ।
पखा फेरी पैर मलोवा जपत रहा तेरा नाउ।
लूण हरामी नानक लाला बखसिहि तुधु वडिआई।
आदि जुगादि दइआपति दाता तुधु विणु मुकति न पाई।
(मारू महला १)

2. कोई आखै भूतना को कहै बेताला।
कोई आखै आदमी नानक बेचारा।
भइआ दिवाना साह का नानक बउराना।
हउ हरि बिनु अवरु न जाणा। (मारू मः १)

3. भउ तेरा भांग खलड़ी मेरा चीतु।
मैं देवाना भइआ अतीतु।
कर कासा दरसन की भूख।
मैं दर मागउ नीता नीत।
तउ दरसन की करउ समाइ।
मैं दर मगांतु भीखिआ पाइ। (तिलंग मः १)

नानक बउराना

१. मेरे स्वामी ! मैं तेरा मोल खरीदा हुआ सेवक हूं और इसी लिए अपने आपको भाग्यवान कहलाता हूं। मैं गुरु-वचनों के मुल्य से तेरी दुकान पर बिक चुका हूं और अब जिस काम तू लगाता हैं, मैं लगता हूं।

मेरे स्वामी ! तेरा सेवक, किस बात की चतुराई करे जबकि वह तेरे हुक्म की भी पूरी तरह पालना नहीं कर सकता ?

मेरे सम्राट ! मेरी मां तेरे घर की सेविका है, मेरा पिता भी तेरा सेवक है। मैं तेरे सेवकों का पुत्र हूँ। मेरी दासी माता तेरे आगे नृत्य करती है और पिता गायन करता है और मैं भी तुझे रीझाने में जुट रहा हूं।

मेरे स्वामी ! यदि तुम पीना चाहें तो मैं तेरे लिए पानी लाऊं और यदि तुझे भूख हो तो पोसना पीसूं मैं तुझ पर पंखे झुलाऊं। तेरे चरण मल मल कर धोऊं और सदैव तेरे ध्यान में जुटा रहूँ।

मेरे मालिक ! मैं नानक तेरे घर का दास बहुत अकृतज्ञ हूँ और यदि तू मुझ जैसे (निकम्मे) को क्षमा कर दे तो तेरी ही बड़ाई है। हे अनुग्रहकरता ! मेहरां दे साईं) तुम आदि जुगादि से अनुकम्पा करता आ रहा है। तेरे बिना मेरा छुटकारा नहीं है।

२. मुझे कोई भूत कहता है, तो कोई ताल से भटका हुआ बताता है और कोई मुझे बेचारा नानक 'बन्दा' कहकर बुलाता है। पर वे क्या जाने कि) मैं अपने सम्राट वाहेगुरु के प्रेम में मतवाला एवं दीवाना हो रहा हूं। मुझे तो उसके बिना और कुछ भी सूझ नहीं रही।

३. मेरे स्वामी, तेरा भय मेरे चित्त में समा रहा है और मैं तेरे प्रेम में मतवाला होकर, सभी दूसरे प्यारों से अतीत हो चुका हूं। तेरे दर्शनों की भूख में मैं अपने हाथों का खप्पर बना कर तेरे द्वार पर नित्यप्रति का भिखारी बन गया हूं। मुझे केवल मात्र तेरे दर्शनों की लगन है। स्वामी ! मुझे द्वार के भिखारी को भिक्षा दो।

ECSTATIC LOVE

1. O' Lord, I am a bought-slave of Thine, and therefore my name is 'the Fortunate One.' I was sold at Thine shop at Guru's bidding and now I go the way Thou biddest.

   Lord, how can Thy slave pose to be clever, when he cannot carry out Thy command even ?

   My mother is Thy slave and so is my father, infact I am begotten of Thy slaves. My mother danceth and father singeth and so am I devoted to Thee O' king, I bring water for Thee if thou art thirsty, and may grind corn when Thou art hungry, I wave fan to Thee and rub and wash Thy feet contemplating all the while on Thy Name.

   O' Lord, Nanak, Thy slave is most ungrateful and if Thou still forgivest him, it is Thy Glory. Thou are the Lord and Bestower of Mercy since times immemorial and without Thee no one is ever emancipated.

2. Some call me a sprite, others that I am out of sorts and still others that I am Nanak, the hopeless man. But (they do not know that) Nanak hath gone mad, being madly in love with his Lord and knoweth not else but Him.

3. Thy fear, O'Lord, incorporates my self and intoxicated with Thy love I am detached from all other attachments. My hands are the begging bowl and at Thy door I crave Try sight for ever and evermore, I have come as a beggar at Thy door, favour me, my Lord, with the alms of Thy benign Look.

गुरु नानक देव मिशन

यह संस्था गुरुमत प्रचार के उद्देश्य से स्थापित की गई है। इसका लक्ष्य मानव का वह चित्र पेश करना है जिसकी रूप-रेखा गुरु नानक देव, गुरु गोबिन्द सिंह जी ने प्रस्तुत की और जिसके लिए गुरु नानक देव मिशन की ओर से पंजाबी, हिन्दी, अंग्रेज़ी तथा दूसरी भारतीय भाषाओं में छोटे-छोटे ट्रैक्ट प्रकाशित किये जाते हैं जो संगतों में बाँटने के लिए असली लागत पर दिये जाते हैं। अब तक 250 ट्रैक्ट प्रकाशित हो चुके हैं जो मिशन के दफ्तर निम्नलिखित पते पर पटियाला से मिल सकते हैं—

मिशन के सदस्यों को ये ट्रैक्ट फ्री (मुफ्त) भेजे जाते हैं। इस की लाइफ मैंम्बरशिप (Life Membership) का चन्दा 125 रुपये और सालाना चन्दा 12 रुपये है।

सचिव

गुरु नानक देव मिशन,
पटियाला।

About Ourselves

Guru Nanak Dev Mission came into being in the year 1963 with the sole aim of imparting the message of Sikh Gurus to the general public and especially to the people of younger generation. For this end in view it provides every month reading material in the form of booklets-eighteen pamphlets annually, mositly in Punjabi, but in Hindi and English as well. The Misson is a non-profit organization. None of its workers or executive members is a paid employee. It is therefore, that its publications are very cheap. It has by now published 250 booklets.

Its annual subscription in India is Rs. 12/-only. Life-membership fee at home is Rs. 125/-and abroad (for Surface Mail) Rs. 200/- and Rs. 300/- for Air Mail.

Besides the Mission has formed a body named 'The Mother of Khalsa Memorial Trust' that holds annual contests on subjects pertaining to Sikh Religion and History among college-going students and awards prizes zone-wise to the top students. For this purpose seven zones comprising of all the colleges of Panjab, some districts of Haryana and Ganga Nagar of Rajasthan have been formed,

---

Printed by Royson Printers for Guru Nanak Dev Mission and published by its Secretary from Sanaur (Patiala) in February 1984.